व्रत, पर्व और त्यौहार

व्रत-पर्व और त्यौहारों का प्रवर्तन हमारे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न, परम विद्वान्, दूरदर्शी, महामना पूर्वजों के द्वारा हुआ था। वे इनके महत्व को, प्रभाव को जानते थे और जो नहीं जानते थे, उन्हें परिचित करवाते थे। महर्षियों ने कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ भी प्रसिद्ध की थी, जिनसे जन-सामान्य को इनके महत्व का ज्ञान होता था।

वास्तव में व्रत से अनेक अंशों में प्राणीमात्र और विशेषकर मनुष्यों का बड़ा भारी उपकार होता है। ग्रामीण देहाती या हमारे बुजुर्ग इस बात को जानते हैं कि अरुचि, अजीर्ण, उदरशूल, कब्ज, सिरदर्द और ज्वर जैसे स्वयं ही ठीक हो जाने वाले रोगो से लेकर कोढ़, उपदंश, जलोदर आदि असाध्य व्याधियाँ भी व्रतों के प्रयोग से निर्मूल हो जाती है और अपूर्व तथा स्थायी आरोग्य प्राप्त होता है। व्रतों के प्रभाव से मनुष्यों की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्पशक्ति बढ़ती है। बुद्धि, विचार, चतुराई या ज्ञान तन्तु विकसित होते हैं।

व्रत के फल-महत्व से प्रायः आप सभी परिचित हैं फिर भी यह सूचित करना अनुचित नहीं होगा कि ''मनुष्यों के कल्याण के लिए व्रत स्वर्ग की सीढ़ियाँ अथवा संसार सागर से पार लगा देने वाली प्रत्यक्ष नौकाएँ हैं''।

रक्षा बन्धन, 03 अगस्त 2020

यह त्यौहार श्रावणी पूर्णिमा को मनाया जाता है जो भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधे रखता है। इस दिन बहन, भाई के हाथ में राखी बांधती है व मस्तक पर टीका लगाती है। रक्षाबंधन का अर्थ है (रक्षा+बंधन) किसी को अपनी रक्षा के लिए बांध लेना। राखी बांधते समय बहन कहती है, ''हे भैया! मैं तुम्हारी शरण में हूँ। मेरी सब प्रकार से रक्षा करना।''

रक्षाबंधन से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इसी अंक में प्रकाशित है।

कज्जली तीज, 06 अगस्त 2020

कृत्य रत्नावली के अनुसार यह व्रत देश, काल और भाषा के अनुसार सावन में रखा जाता है, किन्तु व्यापक रूप से इसे भाद्रपद कृष्ण तृतीया को किया जाता है। इस दिन महेश्वरी वैश्य जौ, गेहूं, चने और चावल के सत्तू में घी-मेवा डालकर उसके भिन्न-भिन्न पदार्थ बनाते हैं तथा चन्द्रोदय के बाद उसी का भोजन किया जाता है। इस कारण यह व्रत 'सातुड़ी तीज' या 'सतवा तीज' कहलाता है।

बहुला चतुर्थी व्रत, 07 अगस्त 2020

यह व्रत भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। पुत्रों की रक्षा हेतु माताएँ इस व्रत को रखती हैं। इस दिन गेहूँ-चावल का भक्षण करना वर्जित माना गया है। इस दिन दूध तथा दूध से बनी कोई सामग्री भी नहीं खायी

जाती। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि आज के दिन गाय के दूध पर केवल बछड़े का अधिकार है। इस व्रत में गाय तथा सिंह की मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजने का विधान है।

व्रत कथा- ब्रज में बहुला नामक कामधेनु के कुल की एक गाय थी जो वन में चरा करती थी। वह नन्दकुल की सर्वश्रेष्ठ गाय थी। एक बार भगवान श्रीकृष्ण ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। एक दिन जब वह गाय वन में चर रही थी तो धर्मरूपी सिंह ने उसे पकड़ लिया। स्वाभावानुसार सिंह ने उसे खा जाना चाहा तो बड़े ही दीन भाव से बहुला गाय बोली, "हे वनराज! मेरा एक छोटा-सा बच्चा है, उसे दूध पिलाने के लिए मुझे छोड़ दीजिए। उसके बाद मैं स्वयं आपके पास आ जाऊंगी, तब मुझे खा लेना।" इस पर सिंह ने कहा, "मृत्यु के पाश में बंधकर तू ऐसा कह रही है। भला मैं तेरा विश्वास कैसे कर सकता हूं?" "हे वनराज! मैं सत्य और धर्म को साक्षी मानकर वचन देती हूं कि मैं अपने बच्चे को दूध पिलाकर लौट आऊंगी।" गाय के ऐसा कहने पर सिंह ने उसे छोड़ दिया। गाय झटपट अपने घर पहुंची और बछड़े को दूध पिलाकर अपने वचन के अनुसार सिंह के पास लौट आई। सिंह के हृदय में बहुला की सत्यता पर उसके प्रति दया उमड़ आई। उसी समय धर्मरूपी सिंह के स्वरूप से भगवान कृष्ण प्रकट हो गए और बोले, "हे बहुल! मैं तेरी परीक्षा ले रहा था जिसमें तू खरी उतरी है। अब मेरे आर्शीवाद से तेरे इसी सत्य के कारण कलयुग में तेरा पूजन होगा।" इसी कारण गाय आज भी माता के रूप में पूजी जाती है।

हलचन्दन षष्ठी व्रत, 09 अगस्त 2020

यह पर्व भगवान श्री कृष्णजी के ज्येष्ठ भ्राता श्री बलरामजी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन श्री बलरामजी का जन्म हुआ था।

श्री बलरामजी का प्रधान शस्त्र हल तथा मूसल है। इसी कारण उन्हें हलधर भी कहा जाता है। उन्हीं के नाम पर इस पर्व का नाम 'हल षष्ठी' पड़ा। इस दिन हल-पूजा का विशेष महत्व है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान है, इसलिए यही हमारे राष्ट्र का प्राण तत्व है।

हल तथा उसके धारक श्री बलरामजी की सारे भारत में प्रतिष्ठा बढ़े, इसलिए भी इस त्यौहार का विशेष महत्व है।

हमारे देश के पूरब के कुछ हिस्सों में इसे 'ललई छठ' भी कहा जाता है। इस व्रत को पुत्रवती स्त्रियां करती है। इस दिन गाय के दूध व दही का सेवन करना वर्जित माना गया है। स्त्रियां प्रातःकाल स्नानादि से निवृत होकर तथा पृथ्वी को लीपकर एक छोटा-सा ताला बनाती हैं। इस तालाब में झरबेरी, ताश तथा पलाश की एक-एक शाखा बांधकर बनाई गई 'हरछठ' को गाड़ दिया जाता है, तब स्त्रियां इसकी पूजा करती हैं।

पूजा में सतनाजा (चना, जौ, गेहूं, धान, अरहर, मक्का तथा मूंग) चढ़ाने के बाद सूखी धूल, हरी कजरियां, होली की राख, होली पर भुने हुए चने के होरहा तथा जौ की बालें चढ़ाती हैं। हरछठ के समीप ही कोई आभूषण तथा हल्दी से रंगा कपड़ा भी रखा जाता है। पूजन करने के बाद भैंस के दूध से बने मक्खन द्वारा हवन करके कथा कही-सुनी जाती है।

विधिवत पूजन करने के बाद निम्नलिखित मंत्र से प्रार्थना करनी चाहिए।

गंगाद्वारे कुशावर्त विल्वके नीलेपर्वते।
स्नात्वा कनखले देवि हरं लब्धवती पतिम्।।
ललिते सुभगे देवि-सुखसौभाग्य दायिनी।
अनन्तं देहि सौभाग्यं मह्यं, तुभ्यं नमो नमः।।

अर्थात-हे देवि! आपने गंगा द्वार, कुशावर्त, विल्वक, नील पर्वत और कलखल तीर्थ में स्नान करके भगवान शंकर को पति के रूप में प्राप्त किया है। सुख और सौभाग्य देने वाली ललिता देवी आपको बारम्बार नमस्कार है, आप मुझे अचल सुहाग दीजिए।

कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, 11 अगस्त 2020

शिव, विष्णु, ब्रह्मा व भविष्यादि पुराणों के अनुसार यह व्रत कृष्ण पक्ष की अष्टमी को किया जाता है। इसे कृष्ण जन्मोत्सव के रूप में मनाते हैं। भगवान श्री कृष्णजी का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय वृष के चन्द्रमा में हुआ था। शास्त्रों में शुद्धा और विद्धा नामक इसके दो भेद हैं। उदय से उदय पर्यन्त शुद्धा और तद्गत सप्तमी या नवमी से विद्धा होती है। शुद्धा या विद्धा समा, न्यूना या अधिका के भेद से तीन प्रकार की होती है। इस प्रकार अट्ठारह भेद बन जाते हैं, परन्तु सिद्धान्त रूप से तत्काल व्यापिनी (अर्धरात्रि में रहने वाली) तिथि अधिक मान्य होती है। यदि वह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो (सप्तमी विद्धा को सर्वथा त्यागकर) नवमी विद्धा को ग्रहण करना चाहिए। यह सर्वमान्य व पापनाशक व्रत बच्चे, युवा, वृद्ध-सभी आयु के स्त्री-पुरुषों को करना चाहिए। इससे पापों का सर्वथा नाश और सुख-सौभाग्य में वृद्धि होती है।

कृष्ण जन्माष्टमी से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इसी अंक में प्रकाशित है।

अजा एकादशी, 15 अगस्त 2020

इस एकादशी को 'कृष्णैकादशी' भी कहा जाता है। ब्रह्मवैवर्त के अनुसार यह व्रत भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस व्रत को करने से पूर्वजन्म की बाधाएं दूर हो जाती हैं। प्राचीन काल में चक्रवर्ती सम्राट हरिशचन्द्र ने इसी व्रत से अपनी बिगड़ी हुई दशा से मुक्ति पाई थी। यह व्रत प्रायः निराहार या अल्पाहार करके रखा जाता है। व्रत के दिन भोजन न करने अथवा एक ही बार भोजन करने का क्या महत्व है? उपवास करने से लक्ष्य की तन्मयता तथा साध्य का सान्निध्य किस प्रकार मिलता है? इस व्रत से हमें इन प्रश्नों के उत्तर तो प्राप्त होते ही हैं, इसके करने से आत्मशुद्धि तथा आध्यात्मिकता का मार्ग भी खुलता है। व्रतों के मर्म को समझने की शक्ति प्राप्त होती है।

व्रत कथा- एक बार राजा हरिशचन्द्र ने स्वप्न में अपना सारा राज्य एक ऋषि को दान दे दिया। राजा ने जिस ऋषि को दान दिया था, उसकी आकृति महर्षि विश्वामित्र से मिलती-जुलती थी। दूसरे दिन ही महर्षि विश्वामित्र उनके दरबार में जा पहुंचे। तब सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र ने स्वप्न में दान किया अपना राज्य उन्हें सौंप दिया और राज दरबार से चलने को उद्धत हुए। तभी विश्वामित्र ने उनसे दक्षिणा में पांच सौ सुवर्ण मुद्राएं मांगी। राजा ने कहा, "हे ऋषिवर! पांच सौ क्या, आप चाहें तो राजकोष से पांच हजार सुवर्ण मुद्राएं ले सकते हैं।" "तुम भूल रहे हो राजन् कि राज्य के साथ ही राजकोष भी तुम मुझे दान कर चुके हो। क्या दान की हुई वस्तु ही दक्षिणा में देना चाहते हो।" तब राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ। फिर अपनी पत्नी तथा पुत्र को बेचकर उन्होंने जो सुवर्ण मुद्राएं जुटाईं, वे भी पूरी पांच सौ न हो सकीं। तब मुद्राएं पूरी करने के लिए उन्होंने स्वयं को भी बेच दिया। राजा हरिशचन्द्र ने जिसके पास स्वयं को बेचा, वह जाति से डोम था और श्मसान का स्वामी होने के नाते वह मृतकों के सम्बन्धियों से 'कर' लेकर उन्हें शवदाह की स्वीकृति देता था। उसने राजा हरिशचन्द्र को इस कार्य के लिए तैनात कर दिया। उनका कार्य यही था कि जो भी व्यक्ति अपने सम्बन्धी का शव लेकर अंतिम संस्कार के लिए श्मशान में आए, हरिश्चन्द उससे 'कर' वसूल करके अंतिम संस्कार की स्वीकृति दें, अन्यथा संस्कार न करने दिया जाए। राजा हरिशचन्द्र उसे अपना कर्त्तव्य समझकर उसका विधिवत् पालन करने लगे। एक दिन की बात है, उस दिन एकादशी थी। राजा हरिशचन्द्र आधी रात के समय श्मशान भूमि में पहरे पर तैनात थे। तभी वहां एक स्त्री अपने पुत्र का दाह संस्कार करने के लिए आई। वह बेहद निर्धन थी। उसके पास कफन के पैसे नहीं थे।

पुत्र के शव के साथ श्मसान में दाखिल हुई, वैसे ही राजा हरिशचन्द्र ने उससे 'कर' मांगा। मगर जिसके पास अपने पुत्र का मृत शरीर ढकने के लिए कफन के पैसे न हों, उसके पास भला 'कर' अदा करने के लिए पैसा कहां से आता? मगर सत्यवादी महाराज ने उसे शवदाह की आज्ञा नहीं दी। बेचारी बिलबिलाकर रोने लगी। एक तो पुत्र शोक, ऊपर से अंतिम संस्कार न होने की स्थिति में शव की दुर्गति होने की आशंका। उसी समय आकाश में घने काले-काले बादल मंडराने लगे। पानी बरसने लगा। अचानक बिजली चमकी तो उसी के प्रकाश में राजा ने उस स्त्री को देखा। वे बुरी तरह चौंक पड़े। वह तो उनकी पत्नी तारामती थी और मृतक बालक था, उनका इकलौता पुत्र रोहिताश्व, जिसका सांप के काटने से असमय देहान्त हो गया था। पत्नी तथा पुत्र की इस हीन-दशा को देखकर महाराज विचलित हो उठे। उस दिन एकादशी थी तथा उन्होंने व्रत किया था, दूसरे परिवार की यह दुर्दशा! उनकी आंखो में आंसू उमड़ आए। उन्होंने भरे-भरे नेत्रों से आसमान की ओर देखा, मानो पूछ रहे हों कि हे देव! और क्या-क्या दृश्य दिखाओगे? पर यह तो उनकी परीक्षा की घड़ी थी। जैसे-तैसे उन्होंने स्वयं को संभाला, फिर भारी मन और अनजान-से होकर तारामती से बोले, "देवी! जिस सत्य की रक्षा के लिए हम लोगों ने राजभवन का त्याग किया, स्वयं को बेचा, उसी सत्य की मर्यादा हेतु अगर मैं इस कष्ट की घड़ी में अडिग न रह पाया तो कर्तव्यच्युत होऊंगा। यद्यपि इस समय तुम्हारी अवस्था दयनीय है, तथापि तुम मेरी सहायता करके मेरी तपस्या की रक्षा करो। 'कर' लिए बिना मैं इस श्मशान में तुम्हें पुत्र के अंतिम संस्कार की अनुमति नहीं दे सकता।" यह सुनकर रानी ने संयम नहीं खोया और शरीर पर लिपटी हुई आधी धोती में से आधी धोती जैसे-तैसे फाड़कर 'कर' के रूप में उसे जैसे ही हरिशचन्द्र की ओर बढ़ाया, वैसे ही प्रभु प्रकट होकर बोले, "हरिशचन्द्र! तुमने सत्य को जीवन में धारण करने का उच्चतम आदर्श स्थापित करके आचरण की सिद्धि का परिचय दिया है। तुम्हारी कर्त्तव्यनिष्ठा धन्य है। तुम इतिहास में अमर रहोगे।" राजा हरिशचन्द्र ने प्रभु को प्रणाम करके आर्शीवाद मांगते हुए कहा, "भगवन्! यदि आप मेरी कर्त्तव्यनिष्ठा और सत्य से प्रसन्न हैं तो इस दुःखिया स्त्री के पुत्र को जीवनदान दे दीजिए।" और फिर ईश्वर के आर्शीवाद से देखते-ही-देखते रोहिताश्व जीवित हो उठा। विश्वामित्र ने भी भगवान के आदेश से उनका सारा राज्य वापस लौटा दिया।

अगस्त 2020 के मुख्य व्रत, पर्व और त्यौंहार

03	रक्षाबंधन
06	कजली तीज
07	बहुला चतुर्थी व्रत
09	हलचंदन षष्ठी व्रत
11	जन्माष्टमी, दुर्वा अष्टमी
15	स्वतंत्रता दिवस
15	अजा एकादशी
16	गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत
17	मास शिवरात्रि
20	रामदेव दूज
21	हरतालिका व्रत
22	गणेश चतुर्थी
23	ऋषी पंचमी
24	बलदेव षष्ठी, सूर्य षष्ठी
25	राधाअष्टमी
26	महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ
26	दधिचि जयन्ती
29	जलझुलनी एकादशी
30	प्रदोष व्रत

गोवत्स पूजा-बछबारस, 16 अगस्त 2020

व्रतोत्सव के अनुसार यह व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष की द्वादशी को किया जाता है। इस दिन माध्याह से पहले गोवत्स (बछड़े) को सजाकर उसकी पूजा करने का विधान है। पूजा के उपरान्त बछड़े को मूंग, मोठ और बाजरे (एक दिन पूर्व भिगोकर अंकुरित किए गए) का नैवेद्य भोग लगाते हैं।

व्रत करने वाली स्त्रियों के भोजन सामग्री में मूंग, मोठ और बाजरे का ही प्राधान्य होता है। इसमें गाय का दूध, दही या घी का उपयोग करना वर्जित है। भैंस का ही दूध, दही या घी प्रयोग कर सकते हैं। इस संदर्भ में प्रचलित मान्यता इस प्रकार है-

कहा जाता है कि इस दिन पहली बार श्रीकृष्ण जंगल में गाये-बछड़े चराने गए थे। उस दिन माता यशोदा ने बड़े मन से श्रीकृष्ण का श्रृंगार करके उन्हें गो चारण के लिए तैयार किया था। पूजा-पाठ के बाद गोपाल ने बछड़े खोल दिए। तब यशोदा ने बलराम को समझाते हुए कहा, "बछड़ों को चराने ज्यादा दूर मत जाना। थोड़ी देर चराकर लौट आना और कृष्ण को अकेला मत छोड़ना। देखना, यमुना के किनारे अकेला न जाए। आपस में मित्रों से झगड़ा भी न करना।" गोपाल द्वारा गोवत्सचारण की इस तिथि को ही पर्व के रूप में मनाया जाता है।

प्रदोष व्रत, 30 अगस्त 2020

प्रदोष व्रत प्रत्येक त्रयोदशी को होता है और इसके नियम आदि के लिये बाजार से प्रदोष व्रत की किताब खरीद लें। कामनाभेद से निम्नानुसार व्रत करें-

(1) पुत्र कामनाः- यदि पुत्र प्राप्ति की कामना हो तो शुक्ल पक्ष की जिस त्रयोदशी को शनिवार हो उससे आरम्भ करके वर्षपर्यन्त या फल प्राप्त होने तक व्रत करें।

(2) ऋण मोचन हेतुः- ऋण मोचन की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को सोमवार हो उससे व्रत आरम्भ करें।

(3) सौभाग्य/धन/स्त्रीः- यदि सौभाग्य और स्त्री की समृद्धि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को शुक्रवार हो उससे व्रत प्रारम्भ करें।

(4) अभिष्ट सिद्धि हेतुः- अभीष्ट सिद्धि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को सोमवार हो उससे व्रत आरम्भ करें।

(5) आयु आरोग्यादि की कामनाः- यदि आयु आरोग्यादि की कामना हो तो जिस त्रयोदशी को रविवार हो उससे आरम्भ करके प्रत्येक शुक्ल-कृष्ण त्रयोदशी को एक वर्ष तक व्रत करें।

संकल्पः- व्रत के दिन प्रातः स्नानादि करके "मम पुत्रादि प्राप्ति कामनया प्रदोष व्रत महं करिष्ये" संकल्प में अपनी इच्छानुसार अन्य जो भी हो जोड़ लें। संकल्प करके सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करें और शिवजी के समीप बैठकर वेदपाठी ब्राह्मण की आज्ञानुसार-

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमते। रुद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शनि मौलिने।।
उग्रायो ग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः।।

इस मंत्र से प्रार्थना करके षोडशोपचार से पूजन करें। नैवेद्य सेंके हुए जौ का सत्तू, घी और शक्कर का भोग लगावें। इसके बाद वहीं आठों दिशाओं में आठ दीपक रखकर प्रत्येक के स्थापन में आठ बार नमस्कार करें। इसके बाद-

धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारक। अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन।।

से वृष (नन्दीश्वर) को जल और दूर्वा खिला-पिलाकर उसका पूजन करें और उसको स्पर्श करके इस पूरे मंत्र से शिव पार्वती और नंदी की प्रार्थना करें।

♦♦♦

धनकुबेर कवच

प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी समुदाय से संबंधित क्यों न हो, उसे लक्ष्मी की प्राप्ति एवं उसके महत्व को स्वीकार करना ही पड़ता है। इसलिए शास्त्रों में बताया गया है कि व्यक्ति को श्री सम्पन्न होना चाहिए।

जो लोग व्यापार करते हैं, अपनी ओर से वे सम्पूर्ण प्रयास करते हैं, कि धन संचय हो, किन्तु आय के पर्याप्त स्त्रोत नही बन पाते हैं। इन कठिनाईयों के निवारण एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि का सर्वश्रेष्ठ उपाय है- धनकुबेर कवच।

व्यक्ति ऊपर उठने की आकांक्षा लिये दिन-रात परिश्रम करते हैं, खून-पसीना एक कर देते हैं लेकिन फिर भी उन्हें वो सब नहीं मिल पाता जो वे चाहते हैं।

हर व्यक्ति अपने जीवन में अष्ट लक्ष्मी को प्राप्त करना चाहता है। जब लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है, तो वहां स्वतः ही अष्ट लक्ष्मी की महत्ता नजर आती है क्योंकि अष्ट लक्ष्मी से ही आठों प्रकार के ऐश्वर्य के मार्ग खुलते हैं। अष्टलक्ष्मी की महिमा का वर्णन इस प्रकार से होता है-

(1) धन लक्ष्मी- (2) यश लक्ष्मी- (3) आयु लक्ष्मी (4) वाहन लक्ष्मी
(5) स्थिर लक्ष्मी (6) गृह लक्ष्मी (7) सन्तान लक्ष्मी (8) भवन लक्ष्मी

व्यक्तित्व को सम्पूर्ण बनाने के लिये अष्ट लक्ष्मी के साथ ही साथ लक्ष्मी की नौ कलाओं का विकास होना भी जरुरी है। जिस व्यक्ति में लक्ष्मी की इन नौ कलाओं का विकास होता है, वहीं लक्ष्मी चिरकाल के लिए विराजमान होती है। यह नौ कलाएँ इस प्रकार है- (1) विभूति, (2) नम्रता, (3) कान्ति, (4) तुष्टि, (5) कीर्ति, (6) सन्तति, (7) पुष्टि, (8) उत्कृष्टि (9) ऋद्धि।

इन सब के लिए चाहिए लक्ष्मी की कृपा दृष्टि, ताकि धन की आवक बनी रहें, वहीं नवग्रहों की भी पूर्ण कृपा बनी रहें, क्योंकि जिस तरह लक्ष्मी की नव कलाएँ हैं, वहीं नवग्रहों से भी इनका संबंध है। यह तो सभी जानते है प्रत्येक ग्रह प्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की प्रसन्नता देता है एवं अप्रसन्न होने पर विशेष प्रकार की हानि देता है। सूर्य प्रसन्न होने पर खूब सारी दौलत, विपुल सम्पत्ति एवं 'राज्य लक्ष्मी' देता है एवं अप्रसन्न होने पर अराज्य अलक्ष्मी देता है। इसी प्रकार जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अनुकूल हो तो आरोग्य की प्राप्ति होती है चन्द्रमा 'आरोग्य लक्ष्मी' देता है प्रतिकूल होने पर अनारोग्य अलक्ष्मी देता है ऐसे जातक के सारे रुपये दवाईयों व रोगों के ईलाज में खर्च हो जाते है। मंगल ऋणमोचन माना जाता है अनुकूल होने पर व्यक्ति पर किसी प्रकार का कर्जा नही रहने देता तथा कुऋण अलक्ष्मी देता है। बुध बुद्धि दायक ग्रह है यह अनुकूल होने पर 'सुज्ञान लक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुज्ञान अलक्ष्मी देता है। ऐसा जातक बुरे व्यसनों एवं कुबुद्धि गलत प्लानिंग से सारे घर का पैसा फूंक डालता है। गुरु पुत्र प्रदाता है। यह 'सुपुत्र सुलक्ष्मी' देता है विपरीत होने पर कुपुत्र कुलक्ष्मी देता है। शुक्र स्त्री प्रदाता है। अनुकूल होने पर 'सुभार्या सुलक्ष्मी' देता है तथा प्रतिकूल होने पर कुर्भार्या कुलक्ष्मी देता है। शनि व्यक्ति को करोड़पति बना डालता है 'श्रेष्ठा लक्ष्मी- देता है। एवं अप्रसन्न होने पर फकीर, महादरिद्री बना डालता है। राहु 'सुमित्र लक्ष्मी' देता है एवं दूसरी अवस्था से शत्रु अलक्ष्मी देता है। केतु कीर्ति दायक, यश, पताका ध्वजा का प्रतीक है। यह 'सुकीर्ति सुलक्ष्मी' देता है एवं प्रतिकूल होने पर अपकीर्ति अलक्ष्मी देता है।

लक्ष्मी व नवग्रह की कृपा से लक्ष्मी की प्राप्ति तो हो जाती है लेकिन संचय के बिना, स्थिर लक्ष्मी के बिना भाग-दौड़ का कोई अर्थ नहीं, इसीलिए संचय के लिए देवादिदेव कुबेर के कृपा की आवश्यकता होती है। पुराणों के अनुसार राजाधिराज धनाध्यक्ष कुबेर समस्त यक्षों, गृहयकों और किन्नरों-इन तीन देवयोनियों के अधिपति कहे गये हैं। ये नवनिधियों-पद्म, महापद्म, शंग, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्चसु के स्वामी है। एक निधि भी अनन्त वैभवों की प्रदाता मानी गयी है और राजाधिराज कुबेर तो गुप्त, प्रकट संसार के समस्त वैभवों के अधिष्ठाता-देवता हैं।

शास्त्रों में लक्ष्मी साधना के साथ-साथ कुबेर के ध्यान का भी वर्णन है। कुबेर, लक्ष्मी द्वारा प्रदत्त धन-वैभव को अनंतकाल तक संरक्षित रखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस प्रकार जल, वायु एवं अग्नि आदि के देवता होते हैं, उसी प्रकार धन-धान्य, वैभव, यश के अधिष्ठाता कुबेर हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर हैं।

कुबेर देव की नौ निधियां मनुष्यों की अर्थ देवता कही गयी है। सात्विक निधियां दुर्लभ है। राजसी निधि या कुछ न्यून दुर्लभ है। तामसी निधियां ही अधिक पाई जाती है। किसी किसी व्यक्ति पर दो या अधिक निधियों की दृष्टि भी हो सकती है। तो फिर आप भी इन्हें प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करें।

यदि आप की निम्न आकांक्षाएँ है.....

1. अथक प्रयासों के बावजूद आशातित धन लाभ नहीं होता।
2. व्यापार/दोस्तों/सरकारी महकमों में पैसा अटका पड़ा है।
3. धन लाभ तो है, परन्तु धन संचय नहीं होता।
4. पैतृक संपत्ति में बढ़ोतरी की जगह उसमें से खर्च हो रहा है।
5. पैतृक संपत्ति मिलने में दिक्कते हैं।...
6. आप की संपत्ति पर कोई अन्य व्यक्ति कब्जा जमा कर बैठा है।
7. आप को चिंता है कि आपने जो संपत्ति जोड़ी है, वह पीढ़ियों तक संचित नहीं रहेगी?

धनकुबेर कवच न्यौछावर 7500/-

BANK A/C. No.

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

SBI, A/C No. 329-8988-9790
IFSC-Code : SBIN0006490

HDFC A/C No. 014-225-6000-5331
IFSC-CODE : HDFC0000142

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र 'त्रिनेत्र' प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)
फोन : 0291-2621625, 2440011-14, 2618625, 2440111/999 फैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org /fameandfortune /Kamal Shrimali